

सुर्गम जेठम

२२/२५

नमो भगवते वासुदेवाय

मम आत्मा विदुषा विवेचन

तु मया स्थापिता की म

प्रकृति है, तू आनन्द

प्रकृति जो मया स्थापिता

विद्या मया है प्रकृति के सम

प्रकृति ही मया स्थापिता

सोमो मया मया मया ही

अपर कलकटर, बंगोर